बिना अंकों वाला रिपोर्ट कार्ड

उमाशंकर पेरिओडी



सेण्टर फॉर लर्निंग (सी.एफ.एल.) से अपने बेटी का पहला रिपोर्ट कार्ड पाकर हमें सुखद आश्चर्य हुआ। पहली बात तो यह कि उसमें अंक नहीं थे। वह तो एक पत्र जैसा था-एक स्नेहपूर्ण गर्माहट से भरा पत्र, जिसे हमारी बेटी के शिक्षकों ने लिखा था। यह एक अकेला पत्र नहीं था वरन सभी सम्बन्धित शिक्षकों द्वारा दिए गए विवरणों का एक गुच्छा था। हमारे लिए तो यह एकदम नई बात थी क्योंकि तब तक हमारी दोनों बेटियाँ गाँव के एक ठेठ सरकारी स्कूल में पढ़ी थीं।

एक परिवार के रूप को इन पत्रों को पढ़ने में हमें बहुत आनन्द आया। इसमें कई विभिन्न विभाग थे। जिस तरह से हमारी बेटियों का वर्णन किया गया था, वह बात हमें सबसे ज्यादा पसन्द आई। हम उनके बारे में जो कुछ भी जानते थे, वह तो उसमें था ही लेकिन जिन पहलुओं के बारे में हम नहीं जानते थे, उनका उल्लेख भी उसमें पाकर हमें बहुत अच्छा लगा। हमें उनके व्यवहार, सोच, मूड और रहने के तरीके के बारे में एक नई अन्तर्दृष्टि मिली।

संरचना-समझना और विकास करना

रिपोर्ट की संरचना बड़ी दिलचस्प है। पहले समन्वयकों की रिपोर्ट है जो दो भागों में है। पहला भाग पूरी कक्षा व विद्यार्थियों के समूह के बारे में है। इससे हमें यह पता चलता है कि पूरे साल में उस समूह ने क्या किया। *"सी.एफ.एल. में बच्चे के जीवन में पारिजात वर्ष सबसे अधिक संरचित होता है।"* आगे यह बताता है कि अकादमिक विषय एवं IGCSE की परीक्षाएँ बहुत अधिक समय ले लेती हैं और बाकी के कामों के लिए बहुत कम समय बचता है। यह अकादमिक कार्यक्रमों का सार देने के साथ-साथ संक्षेप में यह भी बताता है कि गैर-अकादमिक बातों में समूह का अनुभव कैसा रहा। इससे हमें यह पता चलता है समूह आपस में कैसे घुले-मिले, उन्होंने क्या अच्छा किया, किस बात की उपेक्षा की या कब वे *"एक-दूसरे से ऊब गए थे"*। यह रिपोर्ट ग्रुप डायनेमिक्स एवं भावनाओं की सूक्ष्म जानकारी देती है। रिपोर्ट में डायनेमिक्स के बारे में यह कहा गया है- *"मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इतनी कम उम्र में भी कई बच्चों को यह लगता है कि जीवन में कुछ बातें टाली नहीं जा सकतीं जैसे तकलीफ और दुख और इनके बारे में ज्यादा कुछ नहीं किया जा सकता तथा इनके बारे में चर्चा करना समय की बरबादी है।"*

समन्वयकों की रिपोर्ट का दूसरा भाग हमारे बच्चे के बारे में व्यापक रूप से बताता है। *"संवाद की कक्षाओं में वह बहुत विचारशील भागीदार है और अकसर अपने गहन अवलोकन को साझा करती है"* .... *"वह थियेटर करने पर गम्भीरता से विचार कर सकती है।"*

रिपोर्ट का अन्त इस अनुच्छेद से होता है.... *"उसके सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपने प्रति कम सम्मान की भावना को दूर करे और आगामी वर्षों में अपने अधिगम पर और जोर देते हुए आगे बढ़े। मेरी इच्छा है कि वह सीनियर स्कूल की विद्यार्थिनी के रूप में स्कूल में रहे और मैं अगले तीन वर्षों तक उससे बातचीत कर सकूँ।"*

इसके बाद हर उस शिक्षक की रिपोर्ट है जिनसे उसका सम्पर्क रहा। इसमें दो भाग हैं। पहले में बताया गया है कि पाठ्यक्रम क्या था, इसे कक्षा में कैसे पढ़ाया गया और किन पाठों व संसाधनों का प्रयोग किया गया। दूसरे भाग में बताया गया है कि बच्चे ने उस विषय में कैसा प्रदर्शन किया। इसमें विशिष्ट इनपुट दिए गए हैं जैसे... *"हँसमुख और शान्त, कक्षा में घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध भागीदार.....अच्छा हो अगर वह जरूरत पड़ने पर सक्रिय रूप से मदद माँगे"*, *"उसके विचार मौलिक हैं लेकिन हमेशा स्पष्ट नहीं होते।"* यह सब बहुत ही व्यवस्थित ढंग से लिखा हुआ है और इसमें उपशीर्षक भी हैं जैसे काम करने की शैली, विचार एवं विषयवस्तु, शब्दों का चयन, प्रवाह तथा परीक्षा की तैयारी। उसके काम करने की शैली

के बारे में जब हमने यह वाक्य देखा कि, *“मुझे लगता है कि उसे अपने सप्ताहान्त को बेहतर तरीके से नियोजित करना चाहिए और मुझे यह निश्चित रूप से नहीं पता कि क्या वह अपने काम के लिए समय का नियोजन ठीक से कर रही है या नहीं। लिखने से पहले उसे बेहतर योजना बनानी चाहिए।”*- तो हम यह सोचने लगे कि हम अपने सप्ताहान्त को बिताने के तरीके को कैसे बदलें।

जहाँ बच्चे की मदद करने की बात आती है वहाँ यह रिपोर्ट बेहद विशिष्ट है..... *“मुझे लगता है कि बेहतर अध्ययन कौशल हासिल करने में हमें उसकी मदद करनी चाहिए जैसे कि स्पष्टीकरण माँगना, स्मृति की समीक्षा करके अपने समझने के लिए नोट्स बनाना....मुझे नहीं लगता कि वह इन क्षेत्रों में सक्रिय है....यह बात एकदम स्पष्ट है कि उसमें यह सब करने की क्षमता है.... ।”* यह रिपोर्ट अत्यन्त जटिल डायनेमिक्स को भी अपनी पकड़ में ले लेती है जैसे *“उसकी अवधारणात्मक समझ एवं कोर्स के लिए आवश्यक कौशलों की समझ पिछले महीनों से लगातार बढ़ती जा रही है.....मेरे हिसाब से कक्षा में उसकी भागीदारी और उसके लिखित कार्य में असमानता है। उसकी भागीदारी बहुत कम है जबकि उसका लेखन विषय-वस्तु तथा विश्लेषण की दृष्टि से काफी समृद्ध और परिष्कृत है।”*

रिपोर्ट का समापन इस प्रकार से होता है, *“लगता है कि उसका यह वर्ष अपेक्षाकृत शान्तिपूर्ण रहा, जिसमें कोई मुख्य भावनात्मक उतार-चढ़ाव नहीं थे। उसके सहपाठियों के बीच भ्रम की स्थिति के बावजूद स्कूल लौटने के बारे में उसकी निश्चितता को देखकर खुशी हुई।”*

संवाद-मुख्य चालक

हमें कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि यह रिपोर्ट हमारे बच्चे को आँकने वाली छपी हुई एक रिपोर्ट है। रिपोर्ट बाल स्नेही है और पूरा प्रयास बच्चे को समझने व उसकी मदद करने के लिए है। इस रिपोर्ट-मीटिंग के पहले और बाद में बहुत सारी मीटिंग्स होती हैं। रिपोर्ट पर बच्चों के साथ चर्चा होती है, फिर इस पर बड़े विस्तार से माता-पिता के साथ चर्चा होती है और सी.एफ.एल. में माता-पिता का मतलब है - माता-पिता दोनों की मीटिंग में भागीदारी! बाद में हर शिक्षक के साथ अनौपचारिक बातचीत होती है। हर महीने माता-पिता और शिक्षक की मीटिंग होती है और यही एक ऐसी चीज है जो सी.एफ.एल. में अनिवार्य है। यह बच्चों को ग्रेडों में नहीं बाँधती बल्कि बच्चों को समझने में हमारी मदद करती है और इस बात पर ध्यान देती है कि हम सब मिलकर बच्चे की वृद्धि के लिए क्या कर सकते हैं!

शुरू में हम कभी-कभी सोचते थे कि इतनी विस्तृत एवं जटिल रिपोर्ट की क्या जरूरत है। लेकिन सी.एफ.एल. में अपने दोनों बच्चों के आठ साल के अनुभव के बाद, हमें लगता है कि यह हमारे बच्चों की शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ भाग था। इसमें बच्चों की तुलना में हमें शिक्षित करने की प्रक्रिया अधिक थी। इससे हमें अपने बच्चों को समझने में बहुत मदद मिली। यह रिपोर्ट आपको अपने बच्चों को पालने की प्रक्रिया में स्पष्ट निर्देश देती है। यह अपने बच्चों का विभिन्न कोणों से अवलोकन करने में आपकी मदद करती है। यह आपको शिक्षा का परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है। यह आपको सोचने का मौका देती है और जल्दबाजी से नतीजे पर पहुँचने से रोकती है। यह परिवार में, जो कि सर्वाधिक मौलिक संस्था है, संवाद की संस्कृति और लोकतंत्र की प्रक्रिया का निर्माण करने में आपकी मदद करती है! हमें महसूस हुआ कि सी.एफ.एल. का रिपोर्ट कार्ड व्यक्ति का जश्न मनाने का एक तरीका था। अत: हम हमेशा अपने बच्चों की रिपोर्ट पाने को उत्सुक रहते हैं।

नोट: इटैलिक में दिए गए सभी वाक्य सी.एफ.एल. में हमारी बेटी की रिपोर्ट से लिए गए हैं।

उमाशंकर पेरिओडी *पूर्वोत्तर कर्नाटक में शिक्षा और विकास के लिए अज़ीम प्रेमजी संस्थान की पहलों का नेतृत्व करते हैं। विकास के क्षेत्र में उन्हें 25 साल से अधिक का अनुभव है। उन्होंने राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के साथ ही बी.आर.हिल्स कर्नाटक में जनजातीय शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक योगदान दिया है। उन्होंने फील्ड के कार्यकर्ताओं एवं प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों को वह अनुसन्धान करने के लिए मूल स्तर पर प्रशिक्षण दिया है जिसे वे नंगे पाँव अनुसन्धान कहकर बुलाते हैं। वे कर्नाटक राज्य प्रशिक्षक संस्था के संस्थापक सदस्य भी हैं। उनसे* periodi@azimpremjifoundation.org *पर सम्पर्क किया जा सकता है।* ***अनुवाद*** *: नलिनी रावल*